

वायु राशि के प्रकार

वायु-राशि कई प्रकार के होते हैं।
इन्हें वर्गीकरण के लिए समुच्च-भाषा है -

1. नक्षत्रीय-भाषा-या- वायु-राशि-
को प्रकार के होते हैं -

(a) ध्रुवीय-वायु-राशि (मुख्य क्षेत्र = ध्रुवीय उपग्रह)

(b) उष्ण-वायु-राशि (उपोष्ण उपग्रह)

दोनों में अन्तर - उष्ण वायु राशि में तुलनात्मक-इष्टि में वायु-अधिक और समता-की-
समान-कम-होती है

2. तापीय-विशेषता के भाषा-या- वायु-राशि-
को प्रकार के होते हैं -

(a) ठंडी-वायु-राशि

(b) गर्म-वायु-राशि

ये तापीय-हैं अर्थात् ध्रुवीय-
वायु भी गर्म और ठंडी दोनों ही कहती हैं।
यही विशेषता उष्ण-वायु-या-भी-वायु-
होती है।

3. उच्चान-य के भाषा-या- वायु-राशि-
को प्रकार के होते हैं -

(a) महादीपीय-वायु-राशि

(b) महासागरीय-वायु-राशि

आमतौर पर महादीपीय-वायु-राशि-
में महासागरीय-वायु-राशि की तुलना में-
आर्द्रता का स्तर कम होता है। पुनः
महादीपीय-वायु-राशि में बजरी के परिवर्तन-
के गुण होते हैं अर्थात् वे तीव्रता से
ठंडी और गर्म दोनों ही कहते हैं।

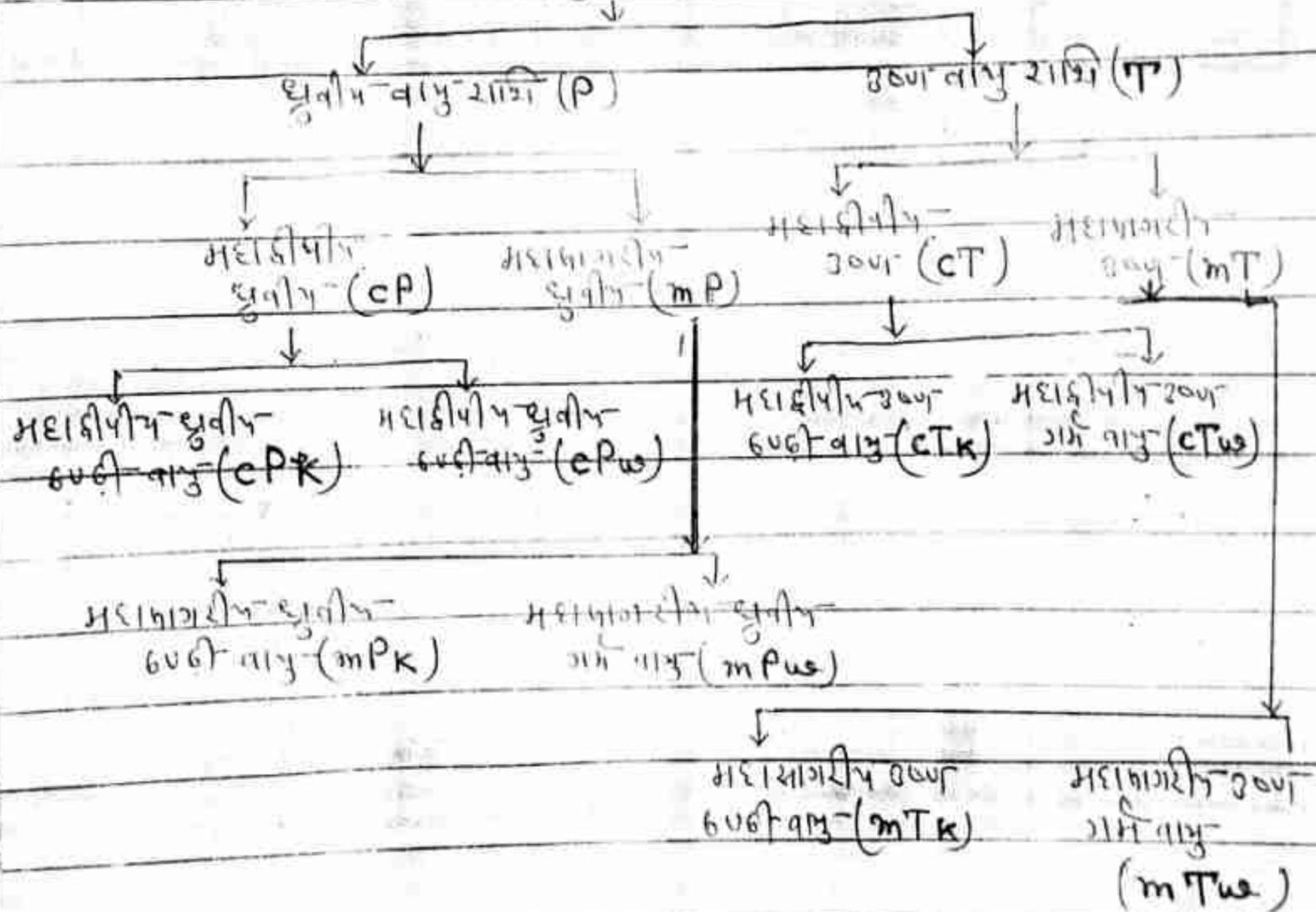
इस वायु-राशियों के विष-

लॉके प्रिन्सिपल शब्दावली का भी प्रयोग किया गया है, जिन्हें नीचे विश-गण-यार्ड में नकशों में किया गया है। नीचे में किया गया यह वायु-राशि-

मिश्रित (इंटीग्रेट) वर्गीकरण का प्रयुक्त किया है ^{Integrat-d} जहाँ अणु-समूह वर्गों के आधार पर। मिश्रित वर्गीकरण की योजना को अवैदिक मानना प्राप्त है।

इस मिश्रित वर्गीकरण की योजना के अनुसार विश्व की वायु-राशियों को आठ प्रमुख वर्गों में बांटा गया है। यह योजना स्वीडीश मॉडर्न मैथेमैटिकल जर्नेल (Bjerkery) को - Fitzgerald ने दिया है।

वायु राशि



सांकेतिक-प्रतीक-वली-का-रूप-रूप-

- P = Polar (ध्रुवीय); T = Tropical (उष्ण)
- Small letter {
 - K = Koldt (शीतल शब्द)
 - w = Warm (गर्म)
 - c = Continental (महादीपीय)
 - m = marine (महासागरीय)

कुछ-मौसम-वैसाकिकी-के-युक्त-इस-
 मा-वर्षों-का-अधिका-औ-अधिका-के-आधा-
 प-वर्षा-करके-इस-वायु-शक्ति-के-द्वारा-वर्षा-
 विशेष-किये-हैं।-तब-मौसम-विज्ञान-की-
 पर-भी-मान्यता-है-।-वायु-मौ-अधिका-के-
 संबंध-विशेष-बुलते-वायुमण्डलीय-गुण-हैं।
 इ-लिए-अक्षांश-औ-उन्मा-के-आधा-प-
 वायु-शक्ति-के-सा-संबंध-वर्षा-होते-हैं-जिनकी-
 मौसमी-विशेष-विशेष-के-मौसम-को-प्रत्यक्ष-
 मान्यता-अप्रत्यक्ष-रूप-के-प्रभावित-करती-हैं।

वायु शक्ति का भौगोलिक विवरण :-

ऊपर-वर्षा-वायु-शक्ति-का-व्यापन-आनी-
 भौगोलिक-विशेष-के-आधा-प-भी-किया-
 गया-है।-वायु-शक्ति-का-भौगोलिक-विवरण-
 अत्यन्त-ही-अपमान-है।-उत्तरी-गोलार्ध-में-वर्षा-
 विवरण-में-मौसमी-परिवर्तन-होते-हैं,-जिनका-
 प्रमुख-कारण-स्वतन्त्र-रूप-सा-सागरीय-जलों-
 का-अपमान-विवरण-है।-दक्षिणी-गोलार्ध-में-
 80% के-अधिक-क्षेत्रफल-पर-जलमण्डल-पाये-
 जाते-हैं।-इ-लिए-मौ-में-वायु-शक्ति-का-

विरण-अक्षांशीय-आँ-लगभग-हामी
हामी-हैं। उत्तरी-गोलार्ध-में-पर-हामी-
वही-हैं-आँ-इसके-क्षेत्र-वर्ध-बढ़-
रहे-हैं। जैसे-उत्तरी-गोलार्ध-में-जाइ-
की-प्रद-में-भारतीय-उपमहादीप-पर-
उत्पन्न-बन-जाता-है-नया-बंगाल-की-
खाड़ी-एक-विश-मा-का-कार्य-कर-
है, लेकिन-गर्मी-प्रद-के-आँ-ही-
भारतीय-उपमहादीप-विश-मा-ही-मान-
है-आँ-अब-जाग-नया-बंगाल-की-
खाड़ी-उत्पन्न। दक्षिणी-गोलार्ध-
में-पैर-परिवर्तन-वही-के-बराबर-
होता-है। वास्तव-आर्द्र-क्षेत्र-आँ-आयकाम-
के-मानव-दक्षिणी-गोलार्ध-के-गर्मी-
प्रद-के-दिनों-में-भी-वायु-क्षेत्र-के-
क्षेत्र-का-कार्य-कर-हैं-क्यों-पहले-है-
गर्मी-हवाएं-समुद्र-की-पर-पंजरी-है-
न-कि-समुद्र-की-वाष्प-हवाएं-पहले-
हामी-हैं (इसका-कारण-नदी-बढ़ी-मलमाप-
का-हामी-संभव-है)।

उत्तरी-गोलार्ध-में-जाइ-आँ-
गर्मी-की-प्रद-में-अलग-अलग-वायु-राशियों-
का-विवाह-होता-है। उत्तरी-गोलार्ध-
में-जाइ-की-प्रद-में-विश-लिखित-
साथ-संयुक्त-वायु-राशियों-का-विवाह-
होता-है। यह-वर्गीकरण-पैर-रक्त-
मंडल-में-1956-में-प्रद-किया-या।

मांस-की-प्रकृति-में-
विकसित-वायु-राशि-

मनु-1-भौगोलिक-प्रदेश-

1) आर्कटिक-महाद्वीप-
वायु-राशि-

ग्रीन-लैण्ड-नया-कनाडा-
के-उत्तर-खिन्-द्वीप-प्रदेश-।

2) आर्कटिक-महाभाग-
वायु-राशि-

आर्कटिक-महाभाग-के-उप-

3) ध्रुवीय-महाद्वीप-
वायु-राशि-

साइबेरिया-नया-कनाडा-।

(साइबेरिया-वायु-राशि-का-कुल-
उत्तरी-पूर-के-लेका-विषय-के-प्रा-
त्य-ई-जल-कन-वायु-राशि-
का-कुल-साइबेरिया-के-लेका-उत्तरी
अमेरिका-के-मध्य-शीत-पूर-ई-।)

4) ध्रुवीय-महाभाग-
वायु-राशि-

उत्तरी-अर्ध-महाभाग-

मुख्यतः-उत्तरी-भाग-नया-उत्तरी
पूर-महाभाग-मुख्यतः-ब्रिग-
भाग-। (उप-ध्रुवीय-निम्न-मा-के
उत्त-)

5) उष्ण-महाद्वीप-
वायु-राशि-

संपूर्ण-उप-उष्ण-मा-गंध-

दो-भू-भू-उत्तरी-पूर्व-मध्य-
ची-प्रदेश, भारतीय-उप-महाद्वीप,
अरब-सागर-द्वीप, ईरान-का-पूर-
नया-द्वारा-महाद्वीप-प्रदेश-।

6) उष्ण-महाभाग-
वायु-राशि-

उत्तरी-अर्ध-पूर्व-उत्तरी-

पूर-के-उप-ध्रुवीय-निम्न-मा-
उप-ध्रुवीय-निम्न-मा-प्रदेश-के-विषय-

7) मू-मध्य-भाग-वायु-राशि

मू-मध्य-भाग-।

गर्मी की वस्तु में माग हो

वायु-राशि का विकास होना है।
गर्मी वस्तु में कार्बनिक महादीपीय वायु-राशि
समाप्त हो जाता है और उष्ण क्षेत्र
ध्रुवीय महादीपीय वायु-राशि का संग्रह
जग जाता है। वस्तुतः ध्रुवीय महादीपीय
वायु-राशि उत्तर की तरफ स्थितक जाती है,
क्योंकि ध्रुव की दिशा में उत्तरी गोलार्ध में
समाप्त हो जाती है। अन्य सभी
वायु-राशियाँ समाप्त होती हैं लेकिन
उष्ण मौसमिक विस्थापन में परिवर्तन हो
जाता है, क्योंकि सभी वायु-राशियाँ
उत्तर की तरफ स्थितक जाती हैं।
उष्ण महादीपीय वायु-राशि और उष्ण-
महासागरीय वायु-राशि में भारी परिवर्तन
देखने का मिलना है। जैसे भारतीय
उष्ण महादीपीय, उत्तर-प्रायद्वीप और दक्षिण-महासागर
की वृद्धि माग में उष्ण महादीपीय
वायु-राशि की प्रधान समाप्त हो चुकी
होती है तथा इसके बदले मध्य-पश्चिम,
U.S.A एवं उत्तरी-पूर्व चीन के ऊपर
उष्ण महासागरीय वायु-राशि का विकास
हो जाता है।

उष्ण महासागरीय वायु-राशि
के अन्तर्गत नवीन वायु-मौसमिक प्रदेश के
रूप में उत्तर माग तथा दक्षिणी चीन भाग
का विकास लगता है। दक्षिण-पश्चिम
में उष्ण महासागरीय वायु-राशि के

अन्तर्गत - एक - लघु - भौगोलिक - प्रदेश - के - उप-में -
 कार्य - करने - लगता - है। - इस - प्रकार - वायु - शांति - के
 भौगोलिक - विवरण - या - भौगोलिक - परिस्थितियों - का - भी
 प्रभाव - पड़ता - है।

वायु - शांति - के - गूडी - हुई - भौगोलिक - विशेषताएं -

सभी - वायु - शांति - अपने - क्षेत्र - में -
 स्थिति - रखती - है - क्योंकि - क्षेत्र - में - स्थिति - भिन्न -
 होता - है, - उन्हीं - परिवर्तन - नहीं - होते। - उन्हीं - कारणों
 अधिक - तथा - कम - मात्रा - का - वायु - मात्रा - कम - तथा
 भौगोलिक - विशेषता - होता - है - लेकिन - क्योंकि - उनके
 वायु - क्षेत्र - की - वायु - मात्रा - में - गति - जारी - है
 जो - अस्थिर - वायु - शांति - अपने - गुणों - में - परिवर्तन -
 करने - लगती - है - जो - के - परिवर्तन - ही - भौगोलिक -
 परिवर्तन - करते - हैं। - इस - दृष्टि - के - लिए - महत्वपूर्ण
 वायु - शांति - का - विश्लेषण - आवश्यक - है, - जो
 निम्न - है -

1. महाद्वीपीय - ध्रुवीय - वायु - शांति - (CP)
2. महाद्वीपीय - ध्रुवीय - वायु - शांति - (MP)
3. महाद्वीपीय - उष्ण - वायु - शांति - (CT)
4. महाद्वीपीय - उष्ण - वायु - शांति - (MT)

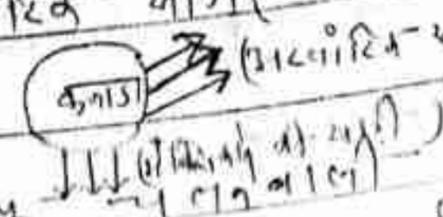
(1). महाद्वीपीय - ध्रुवीय - वायु - शांति - का - सर्वाधिक
 भौगोलिक - प्रभाव - गार्ड - की - शक्ति - में - होता - है।
 इस - वायु - शांति - के - दो - प्रमुख - क्षेत्र - हैं -
 कनाडा - और - आइसलैंड। - कनाडा - से - चलने - वाली -
 वायु - की - दिशा - दक्षिण - है -

(a) दक्षिण-पूरव = २२५ - (अक्षांश - भौतिकी) =

की खाड़ी की २२५) (b) उत्तर = २१

की २२५ - (अक्षांश) उत्तर-उत्तराधिक यात्रा - की

२२५ -)

दक्षिण-की २२५ 

वायु-बिजगाई कदलानी है, यह संकेत

उत्तरी-अमेरिका-में-कडाके की ६०६३-

लाती है। यहाँ-तक-कि-दक्षिण-तट-भूमिकी-की-

खाड़ी) तट-नायमान-निर्माण-तक-पहुँच-जाता-

है। मध्य-में-परिधीय-लाया-के-अकार-

में-में-हवाएं-आवृत्त-मध्यवर्ती-हवा-

दक्षिण-उत्तरी-अमेरिका-में-हवा-जाती-

है। इसके-नायमान-में-गिरावट-आती-है,

वायुमण्डलीय-दबाव-में-बृद्धि-होती-है,

कई-दिनों-तक-धुंधली-हवाएं-चलती-हैं,

उष्ण-पाव-होता-है-अक्षांश-४२-५१-तक

के-महीन-कणों-का-निर्माण-होने-लगता-

है-जा-कपाक-आलू,-प्याज,-गुब्बारा-

जैसे-पुष्पों-के-गिर-बड़ा-दायकारक-

होता-है

उत्तर = २१ की २२५-जान-वाली-हवा

उत्तरी-अटलांटिक-महासागर-की-२२५-जानी-

है (उपधुनीय-निष्ण-मा-की-२२५)।

यदि-में-हवा-आसुद्ध-के-मार्ग-के-पुनराती-

है, इहालिय-माँके-में-इधमें-वापीय-

बृद्धि-होती-है, पुनः-इधमें-जमी-की-

भी-बृद्धि-हो-जाती-है। लेकिन-उत्तरी-

यह-अधिक-अक्षांश-की-२२५-बढ़ती-है

वा - इन्हें - वापीन - गिरावर - करी - है - तथा -

वायुमण्डल - में - काइरे - मुख्य - वागवस्था - का - निर्माण - करती - है । यह - वायु - नभूकाण्डल - के - रूप -

गुण - बंध - के - अन्त - काइरे - अरे - वागवस्था - का - निर्माण - करती - है । उत्तरी - अक्षांशिक - मार्ग - के -

विक्षिण - की - वरु - तथा - पुनः - उत्तर - की - वरु -

को - शाखाओं - में - बँटने - का - एक - प्रमुख - कारण - यह - प्रदेश - का - अक्ष - मंडित - है । पुनः - अक्षिक -

वायु - के - गिरावर - के - दली - वर्षा - भी - होती -

है , जो - मंडित - को - भी - अक्षिक -

वृद्धकारक - बनाती - है ।

साइबरियाई - उष्णमा - से - हवाएं - कई

दिशाओं - में - चलती - है । इनकी - एक - शाखा -

मध्यवर्ती - प्रदेश - की - वरु , दूसरी - चीन - की -

वरु , तीसरी - मध्य - एशियाई - गणराज्य - की - वरु ,

चौथी - जापान - सागर - की - वरु एवं - पांचवीं -

अक्षांशिक - सागर - की - वरु - जाती - है । इन - शाखाओं -

में - जापान - सागर - की - वरु - कान्त - वाली - शाखा -

वर्षा - का - ग्रहण - करती - है जो - जापान - के - पश्चिमी -

वरु - या - साइ - में - दली - वर्षा - करती - है ।

अक्षांशिक - सागर - के - अन्त - गुजरने - वाली - हवा -

शुष्क - होती - है लेकिन - यह - अल्प - ही - बफिलि

(Cirrus) - होती - है । अक्षांशिक - सागर - में -

ठोड़ी - जलधारा - होने - के - कारण - यह - वर्षा -

वर्षा - ग्रहण - का - पानी - है , फलतः - यह - शुष्क -

रह - जाती - है । अन्य - दिशाओं - में - जाने - वाली -

हवाएं - महादीप्ति - होती - है जो - ~~उप~~ उप

प्रकार - के - प्रभाव - डालते - हैं जो - कनाडा - के - वक्षिण -

दिशा - की - वरु - चलने - वाली - ध्रुवीय - हवाएं - प्रभाव -

डालती - है ।

(2). महासागरीय ध्रुवीय दबाव-

गुल्फ स्ट्रिम आर्कटिक सागर तथा उप-ध्रुवीय
जिम्नमाल के उच्च अक्षांशिक महासागर
में उच्च दबाव होता है। ये वायु उच्च
अक्षांश के जिम्नमाल अक्षांश की तरफ
चलती है। सभी अक्षांशों में ये समुद्री
ध्रुवीय दबाव हैं जिन्हें वायु और गर्मी
में क्रमशः गति होती है। ये वायु-
उप-ध्रुवीय जिम्नमाल क्षेत्रों में उपलब्ध
गर्मी वायु के अभिसरण (convergence)
का प्रभाव करती हैं। इसी क्रम में ये
शीत सीमा (cold front) का निर्माण
करती हैं। शीत सीमा पर मिट्टी
है जिहां ध्रुवीय ठंडी वायु उच्च गर्मी वायु
के क्षेत्र में प्रविष्ट करती है और इसके
गर्मी वायु क्षेत्र के ऊपर उठती है।
और संघटित होकर वर्षा करती है।
ये वर्षा शीतलण चक्रवात के अंग
है। इसके अलावा में महासागरीय
ध्रुवीय वायु ही शीतलण चक्रवात
के उत्पत्ति का प्रमुख कारण है।
जब शीतलण का निर्माण होता है तो
इस ठंडी वायु क्षेत्र में वर्षा भी
होने लगती है, और गर्म अक्षांश
ही कलकत्ता ही नाम है।